

B.A. (Hons & Sub) Part-I

Paper-II

Abnormal Psychology

By - Mr. Ramendra Kumar Singh.  
Deptt of Psychology  
D.K. College, Dumraon  
(Buxar) VKSU, Ar

प्रश्न:- दैनिक जीवन की मनोविकृतियों से आप क्या समझते हैं? इसके विभिन्न प्रकारों के बारे में लिखें।

दैनिक जीवन की मनोविकृतियों के बारे में विस्तार पूर्वक चर्चा करें।

प्रायः हम अपने दैनिक जीवन में कोई

न कोई भूलें करते हैं। कुछ भूलें आकारण एवं महत्वहीन होती हैं तो कुछ भूलें उद्देश्यपूर्ण एवं सार्थक होती हैं। इनके पीछे कोई न कोई कारण आवश्यक ही होगा है। आकारण एवं संयोगवशात् चरित्र धारणों एवं भूलों की व्याख्या संयोग-सिद्धान्त (Chance theory) के आधार पर की जाती है क्योंकि ऐसी भूलों का ज्ञान व्यक्ति को रहता है और सुधारना भी चाहता है।

दूसरी तरफ कुछ भूलें ऐसी होती हैं जिनके पीछे कोई न कोई कारण आवश्यक होगा है, ऐसी भूलों के पीछे अचेतन मन की दमित इच्छाओं का अर्थ होगा है। इनकी व्याख्या कारण-प्रभाव सिद्धान्त (Cause-effect theory) के आधार पर की जाती है। इस सिद्धान्त का प्रतिपादक सिगमंड फ्रायड ने की। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'Psychopathology of everyday life' में ऐसी दैनिक जीवन की मनो विकृतियों की विशद चर्चा की है।

फ्रायड का इस संदर्भ में कहना है कि "जब अवांछित इच्छाओं की तुष्टि चेतन स्तर पर नहीं हो पाती है तो वे अचेतन मन में जाकर दमित हो जाती हैं, लेकिन ऐसी इच्छाएँ चेतना में आकर संतुष्टि पाने के लिए प्रयत्नशील रहती हैं और दैनिक जीवन की भूलों, छोटी-मोटी भूलों के माध्यम से तुष्ट हो जाती हैं। ये सारे कार्य अचेतन रूप से हो जाते हैं जिसकी चेतना अथवा ज्ञान व्यक्ति को नहीं रहता है। इस तरह व्यक्ति की चिंता अथवा तनाव दूर हो जाता है। दैनिक जीवन की ऐसी ही भूलों को दैनिक जीवन की मनोविकृतियाँ कहा जाता है।"

दैनिक जीवन की मनोविकृतियों के प्रकार :-

दैनिक जीवन में कई ऐसी भूलें होती हैं, जिसका कारण अचेतन होता है।  
ऐसी ही कुछ प्रमुख मनोविकृतियाँ निम्नलिखित हैं :-

(1) बोलने की भूल :- सामान्यतः हम अपने प्रतिदिन की जीवन में बोलने की भूलें करते हैं। बोलना चाहते हैं कुछ, लेकिन कुछ ऐसी बातें बोल देते हैं जिसे सोचा भी नहीं था। ऐसी भूलें संयोगवश नहीं होती हैं बल्कि अचेतन मन की दमित विचारों के चलते होती हैं। किसी की प्रशंसा करते-करते विरोध में बोल देना, कुमारी की जगह श्रीमती बोलना। ये सब अचेतन की दमित इच्छाओं के चलते होता है। फ्रायड के ही शब्दों में :- "व्यक्ति बोलने की भूलों के माध्यम से अपनी दमित इच्छाओं की संतुष्टि करता है, जिससे उसका मानसिक द्वन्द्व दूर हो जाता है। अतः ऐसी भूलें कारणवश एवं सोधीवश होती हैं।"

(2) लिखने की भूलें :- प्रायः यह देखने को मिलता है कि हम लिखना कुछ चाहते हैं लिख कुछ और देते हैं। ऐसी गलतियों में किसी महत्वपूर्ण शब्द का छुट जाना, सही शब्द की जगह गलत शब्द का लिख देना, वाद वाले शब्द को पडले लिख देना। यह देखने को मिलता है कि ऐसी गलतियाँ व्याकरण के अच्छे जानकार लोग भी करते हैं। फ्रायड के अनुसार इसके पीछे अचेतन का शत्रु होता है। प्राउन ने इसका एक सुन्दर उदाहरण दिया है उनके एक मित्र को शिक्षागो जाता था पर पत्र में लिफाफे पर पत्ता बगैर लिख दिया।

(3) नामों की भूलना :- हम अपने दैनिक जीवन में अपने प्रिय जनों का नाम, स्थान का नाम, तिथि आदि भूल जाते हैं और ऐसी भूलों का कारण भी पता नहीं चलता है। फ्रायड का मानना है कि "भूलना एक अचयनात्मक क्रिया है हम उन्हीं चीजों को भूलने चाहते हैं अचेतन रूप से उसे ही भूलते हैं।"

अतः हम उन्हीं के नामों को भूलते हैं जिन्हें भूलना चाहते हैं।

(4) छपाई की भूलें :- छपाई सम्बन्धी भूलों की गठना मनोविकृतियों के अन्तर्गत की जाती है। इसके पीछे भी अचेतन का शत्रु रहता है। ब्लॉम्बे रिडर, सम्पादक, कम्पोजर कई लोग जिम्मेवार होते हैं।

इतना अपर्यय होता है कि इसके पीछे भी अचेतन में दमित प्रेम एवं व्यूहा के अनूप भाव गलतियों के माध्यम से प्रकट होते हैं। उगर्लॉस में डेमोक्रेटिक आखबार में किसी उत्सव का समाचार में राजकुमार प्रिंस को 'क्राउन प्रिंस' हापने के जगह पर क्लाउन प्रिंस (विदूषक, मसखरा प्रिंस) हाप दिया। इसके अगले दिन क्लाल मच गया। फलतः सुधार करके Corwin हापा। पुनः क्लाल हुआ। बाद में विश्लेषण करने पर बात हुआ कि उस आखबार के अधिकारों का कमी उस राजकुमार से असंतुष्ट रहते थे। इसलिए अचेतन रूप से ऐसा हो रहा था।

(5) पहचान की भूल - दैनिक जीवन में प्रायः ऐसी नैतिक भाती हैं, जहाँ हम किसी व्यक्ति या स्थान की सही पहचान करने की भूलें करते हैं। किसी अपरिचित व्यक्ति को अपना परिचित मित्र या सम्बन्धी समझ बैठते हैं। कोई व्यक्ति अथवा वस्तु वही मौजूद रहती है, पर हम देख नहीं पाते हैं। फ्रायड ने इस तरह की घटनाओं को अचेतन में दमित इच्छा-प्रवाह बताया है। पहचानने की भूलों वास्तव में Mental Conflict के कारण होती हैं। जब कोई अपने मित्र से मिलने की उम्मीद पाले रहता है तो Mental Self बन जाता है फलतः दूसरे अपरिचित व्यक्ति या चीज को भी उसी रूप में Perceive करता है। उही तरह जब किसी से घृणा करे या मिलना नहीं चाहते हैं तो उपस्थित रहने पर भी देख नहीं पाते।

(6) वस्तु को बेजगह रखने की भूलें - कभी-कभी हम ऐसी गलतियों करते हैं। कोई वस्तु ले जाकर ऐसी जगहों पर छोड़ देते हैं और बाद में जाकर खूँट लागता है। चागी की गुन्हा, हाता, कुलम आदि को अक्सर हम वही रख देते हैं। फ्रायड ऐसी भूलों के लिए भी अचेतन को जिम्मेवार मानते हैं। एक लुका व्यक्ति जब भी सयुराल जाता था अपना हाता, चश्मा कुछ न कुछ छोड़ जाता था फिर वह जाकर लाता था। दरअसल वह सयुराल में अधिक से अधिक रहना चाहता था पर लोगों की ईसाई से नहीं रह पाता है। अचेतन रूप से दमित इच्छा द्वारा कोई छोड़ने पर लक्ष्य करती थी कि वह दुबारा जा लें।

(7) प्रतीकालक क्रियाएँ (Symbolic Activities) व्यक्ति कभी कभी अज्ञान में भी कुछ ऐसी क्रियाएँ कर देता है जिसे लोग निरर्थक तथा आकारा मानते हैं। पेंड शिलावा, आगुंठी निकालना पहनना चागी के गुच्छे को नचाना आदि-आदि। इस संदर्भ में म्मोविश्लेषण

का मानना है कि ऐसी क्रियाएं प्रतीकालक होती हैं। अन्वेषण  
वैधी प्रेरणाओं की संरूपि होती हैं। अंगुली को धार-धार  
एवं निकालना इस बात का प्रतीक है कि वह या तो आपने  
Sex Partner से नरान है या कामुकता की श्रव से परेशान है।

निष्कर्ष: हम कह सकते हैं कि हैदरनिक  
जीवन की मनी विकृतियों का स्वरूप हमारे अन्वेषण में दुर्गम सुदृढ-  
प्रकार है जिसके माध्यम से हम निंग एवं तनाव के दुष्परिणामों  
से बचते हैं। तथापि स्वप्न एवं जुग इसमें Personal  
Unconscious के साथ ही साथ Racial Unconscious का भी  
संघ मानते हैं जिसे फ्रायड अंतर्देशी कहते हैं। क्योंकि स्वप्न  
केवल या ~~काम~~ काम करते समय हम ऊनी ऊनी जानवरों की  
व्यक्तियों वाले होते हैं, जो Racial Unconscious की उपर  
होते हैं। जो जीव है निक जीवन की मनी विकृतियों एक अमेर  
एवं दिल रूप सम्पूर्ण है।

R Singh

29.05.2020

Dr. Ramendra Kr Singh

Dr. N. College  
Dumraon